Toppersnotes®
Unleash the topper in you

Bihar – LET

लाइब्रेरियन

पुस्तकालय पात्रता परीक्षा

भाग - 2

शिक्षण कला एवं पर्यावरण अध्ययन

SIERRA INNOVATIONS

विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
1	बालकेंद्रित एवं प्रगतिशील शिक्षण की अवधारणा	1
2	भाषा एवं विचार	5
3	सीखने का मूल्यांकन	11
4	अधिगम	22
5	समावेशित शिक्षा एवं विविध अधिगमकर्ताओं की समझ	31
6	समावेशी बच्चों हेतु निर्देशन एवं परामर्श	42
7	सीखने की क्रिया : बच्चे कैसे सोचते और सीखते हैं	50
8	शिक्षण और अधिगम की मूलभूत प्रक्रियाएँ	53
9	शिक्षण अभिगम प्रक्रिया	65
10	राष्ट्रिय पाठ्यचर्या रुपरेखा–2005	73
11	शिक्षण अधिगम के नवाचार	75
12	सामाजिक अध्ययन में सहायक सामग्री	86
13	सामाजिक अध्ययन की समस्या	99
14	अधिगम कठिनाइयों, क्षति आदि से ग्रस्त बच्चों की आवश्यकताओं की पहचान	101
15	पशु – पक्षी एवं पौधे	112
16	प्राकृतिक संसाधन	133
17	वन संसाधन एवं वनोन्मूलन	148
18	खेल	166
19	स्थानीय मौसम, जलवायु और जलवायु परिवर्तन	177
20	पर्यावरण पर हानिकारक प्रभाव	192
21	कृषि एवं फसल	201
22	संक्रामक रोग एवं संक्रमण	216
23	आपदा प्रबंधन	228

विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
24	अंतरिक्ष विज्ञान	239
25	मानव निर्मित साधन (दैनिक जीवन मे रसायन)	264

1 CHAPTER बालकेंद्रित एवं प्रगतिशील शिक्षण की अवधारणा

बाल केंद्रित शिक्षा

आधुनिक युग में शिक्षा में एक महत्वपूर्ण क्रांतिकारी बदलाव आया है जहाँ विषय-केंद्रित शिक्षा की जगह बाल-केंद्रित शिक्षा ने ली है। इस शिक्षण पद्धति में सम्पूर्ण शैक्षिक विषयों, क्रियाओं और गतिविधियों का नियोजन बच्चे को केंद्र में रखकर किया जाता है। यह परिवर्तन अनुभववादी (प्रयोगवादी) विचारधारा पर आधारित है, जिसके अनुसार अनुभव किसी व्यक्ति के वातावरण की भांति स्थिर नहीं रहता। अतः पाठ्यक्रम में पूर्वनिर्धारित विषयों की बजाय बच्चों की रुचियों और आवश्यकताओं को प्राथमिकता दी जाती है।

बाल-केंद्रित शिक्षा के समर्थक

- **जॉन डीवी (John Dewey, U.S.A.)** बाल-केंद्रित शिक्षा के प्रमुख समर्थक थे।
- उन्होंने कहा कि बच्चों की **जरूरतों के अनुसार गतिविधियों और योजनाओं** का निर्माण होना चाहिए।
- बच्चे स्वाभाविक रूप से जिज्ञासु, रचनात्मक और सीखने की क्षमता रखते हैं।
- प्रगतिशील विद्यालयों में **"करके सीखने"** (Learning by Doing) पर जोर दिया जाता है।
- बच्चे को **समाधानकर्ता** बनाना चाहिए जो महत्वपूर्ण कौशल और चिंतन सीखें।
- शिक्षा **वर्तमान जीवन के लिए** होनी चाहिए, न कि केवल पुस्तक आधारित।
- अधिगम एक **सामाजिक, सक्रिय और लोकतांत्रिक प्रक्रिया** होनी चाहिए।

- जॉन डीवी के अनुसार शिक्षा एक **त्रिध्रुवीय प्रक्रिया (Tripolar Process)** है जिसमें शिक्षक स्वतंत्र चर (Independent), बालक आश्रित चर (Dependent), और पाठ्यक्रम मध्यस्थ चर (Intervening) होता है।

बाल-केंद्रित शिक्षा के आधार

- **क्रियाशील शिक्षा:** बच्चों को सक्रिय और क्रियाशील बनाकर शिक्षा देना बाल-केंद्रित शिक्षा का मुख्य उद्देश्य है।
- **सम्पूर्ण विकास:** यह शिक्षा बच्चों के शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, संवेगात्मक एवं आध्यात्मिक विकास का संतुलित समुचित विकास सुनिश्चित करती है।
- **प्राकृतिक रुचि और प्रेरणा:** बच्चों की स्वाभाविक प्रवृत्तियों, प्रेरणाओं और संवेगों को शिक्षा योजना में प्राथमिकता दी जाती है।
- **व्यवहारिक अधिगम:** बच्चों के ज्ञान या अनुभव का निर्माण उनके स्वयं की गतिविधियों और अनुभवों से होता है।

बाल केंद्रित शिक्षा के उद्देश्य

- योग्यता और रुचि के अनुसार अधिगम
- रचनात्मकता और गतिविधि आधारित अधिगम
- व्यक्तिगत अनुभवों से सीखने का अवसर
- आत्म क्रिया के अवसर
- नैतिक एवं मूल्य परक शिक्षा
- व्यक्तिगत अंतर का सम्मान और विविध प्रतिभाओं को विकसित करना ।

बाल केंद्रित शिक्षा की विशेषताएँ

- **आधारभूत शिक्षा का स्वरूप:** बाल केन्द्रित शिक्षा का पहला प्रमुख गुण यह है कि यह आधारभूत शिक्षा होती है, जिसमें बालक को पहली बार शब्द बोलना सिखाया जाता है। बालक की ओर ध्यान केंद्रित कर उसे बार-बार प्रयास के माध्यम से शब्द बोलने के लिए प्रेरित किया जाता है, जैसे 'मम्मी', 'पापा' आदि। इस प्रकार यह शिक्षा बालक के शुरुआती भाषाई विकास की नींव रखती है।
- **चहुँमुखी विकास पर बल:** इस शिक्षा में बालक के समग्र विकास को महत्व दिया जाता है, ताकि वह ज्ञानवान बनने के साथ-साथ हंसमुख और सामाजिक रूप से स्वीकार्य व्यवहार कर सके। बालक की क्रियाओं और गुणों की समाज में प्रशंसा हो तथा वह मानसिक, सामाजिक और भावनात्मक रूप से स्वस्थ रहे।
- **व्यक्तिगत स्वभाव और क्षमता के अनुसार शिक्षा:** बालक की अभिरुचि, बुद्धि, और स्वभाव के अनुरूप शिक्षा दी जाती है। इससे मन्द-बुद्धि बालक भी अपनी गति से सीख पाता है और तेज बुद्धि वाले बालक अपनी क्षमतानुसार आगे बढ़ते हैं।
- **साधनों की अपेक्षा कम:** बाल केन्द्रित शिक्षा के लिए विशेष साधनों की जरूरत नहीं होती। बालक अपने परिवार और सामाजिक वातावरण के अनुसार ही ज्ञान प्राप्त करता है। बालक अपने परिवेश की उपज होता है और उसके अनुसार शिक्षा स्वतः ही व्यवस्था बन जाती है।
- **शारीरिक और मानसिक विकास का समावेश:** इस शिक्षा में बालक के शारीरिक, मानसिक एवं संवेगात्मक विकास को भी समुचित दिशा प्रदान की जाती है। बालक को सही दिशा में विकसित करना इसका एक महत्वपूर्ण अंग है।

बाल केन्द्रित शिक्षा का महत्व

- बालक प्रधान शिक्षण
- सरल, सहज और रुचिपूर्ण शिक्षण
- बालकों को आत्म-अभिव्यक्ति के अवसर प्रदान करना
- ज्ञानेन्द्रिय प्रशिक्षण पर बल देना
- व्यावहारिक एवं सामाजिक ज्ञान का समावेश
- क्रियाशीलता आधारित शिक्षा
- स्वयं करके सीखने पर जोर देना

बाल केन्द्रित शिक्षा में शिक्षक की भूमिका

- शिक्षक बालकों का सहयोगी, मार्गदर्शक एवं सेवक होता है।
- शिक्षक बालकों के समग्र विकास में मदद करता है और क्रियाकलापों को सुचारू रूप से संचालित करवाता है।
- कक्षा में शिक्षक बालक और विषय-वस्तु के बीच एक समन्वय स्थापित करता है जो बालक के संज्ञानात्मक, भावनात्मक और सामाजिक विकास के लिए आवश्यक है।
- शिक्षक को बालक की व्यक्तिगत विशेषताओं, रुचियों और क्षमताओं को समझना आवश्यक है ताकि शिक्षा बालक के अनुकूल हो।
- शिक्षक बाल केन्द्रित शिक्षण का 'धुरी' है, जो बालकों को माली की तरह पोषित करता है, उन्हें पशु प्रवृत्ति से निकालकर मानवीय, सामाजिक और रचनात्मक व्यक्तित्व की ओर उन्मुख करता है।

बाल केन्द्रित शिक्षा के सिद्धान्त

- **बालकों को क्रियाशील रखना:** शिक्षा के दौरान बालकों को सक्रिय और व्यस्त रखना आवश्यक है, ताकि वे अपने हाथ, पैर, और मस्तिष्क सभी का समुचित उपयोग कर सकें और शारीरिक व मानसिक रूप से सशक्त बनें।

- **प्रेरणा हेतु उदाहरण देना:** बालकों को महापुरुषों, वैज्ञानिकों और आदर्श व्यक्तित्वों के उदाहरण देकर प्रेरित करना चाहिए, जिससे उनमें अच्छा आचरण, नैतिकता और रचनात्मकता का विकास हो।
- **अनुकरणीय व्यवहार एवं नैतिक शिक्षण:** नैतिक कहानियों, नाटकों और अनुकरणीय व्यवहार के माध्यम से बालकों को सही एवं उपयुक्त शिक्षा प्रदान की जाती है।
- **जीवन से जुड़े ज्ञान का शिक्षण:**शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो बालक के दैनिक जीवन से जुड़ी हो और उसे व्यावहारिक जीवन में उपयोगी ज्ञान प्रदान करे।
- **उद्देश्यपरक शिक्षा:** शिक्षा का उद्देश्य स्पष्ट होना चाहिए और बालक को ऐसे ज्ञान व कौशल से लैस करना चाहिए जो उसके जीवन के उद्देश्यों की पूर्ति में सहायक हो।
- **बालक की योग्यता एवं रुचि के अनुसार विषय चयन:**शिक्षा की योजना बनाते समय बालक की व्यक्तिगत क्षमताओं, रुचियों और योग्यता को ध्यान में रखा जाना चाहिए ताकि वह स्वाभाविक रूप से सीखने के लिए प्रेरित हो।

बाल केन्द्रित शिक्षा के अन्तर्गत पाठ्यक्रम का स्वरूप

- जीवनोपयोगी पाठ्यक्रम
- पूर्व ज्ञान एवं पर्यावरण पर आधारित
- बालकों की रुचि, योग्यता एवं क्षमता के अनुरूप
- नम्य एवं लचीला
- पर्यावरण के अनुरूप
- राष्ट्रीय भावनाओं को विकसित करने वाला
- समाज एवं राज्य की आवश्यकताओं के अनुसार
- मानसिक स्तर एवं परिपक्वता के अनुकूल
- व्यक्तिगत भिन्नताओं का सम्मान
- गतिविधि आधारित शिक्षण

प्रगतिशील शिक्षा

प्रगतिशील शिक्षा पारंपरिक शिक्षा के विरोध या प्रतिक्रिया के रूप में उभरी एक शिक्षा प्रणाली है। इस शिक्षा के विकास में अमेरिका के मनोवैज्ञानिक **जॉन डी.वी. (John Dewey)** का विशेष योगदान रहा। प्रगतिशील शिक्षा के अनुसार शिक्षा का मुख्य उद्देश्य बच्चे की व्यक्तिगत शक्तियों, क्षमताओं और रुचियों का विकास करना है।

प्रगतिशील शिक्षा का मूल संदेश है कि **"शिक्षा बालक के लिए है, बालक शिक्षा के लिए नहीं।"**

इसका उद्देश्य ऐसे वातावरण का निर्माण करना है जहाँ प्रत्येक बच्चे को अपने सामाजिक विकास, सहयोग और सामंजस्य के लिए पर्याप्त अवसर मिलें। प्रगतिशील शिक्षा का लक्ष्य बालक के व्यक्तित्व का समग्र विकास करना है ताकि वह समाज का एक जिम्मेदार और सृजनशील नागरिक बन सके। इसके सिद्धांतों के आधार पर शिक्षा को सार्वभौमिक, अनिवार्य और समावेशी बनाने पर जोर दिया जाता है।

प्रगतिशील शिक्षा का महत्व

- बालकों की व्यक्तिगत रुचियों और जरूरतों को समझकर शिक्षा प्रक्रिया में उनका निर्देशन करना।
- बच्चों को **स्वयं करके सीखने** के अवसर देना, जिससे वे सक्रिय और स्वतंत्र बनें।
- अनुशासन को बनाए रखते हुए बच्चों की स्वाभाविक प्रवृत्तियों और अभिवृत्तियों को दबाना नहीं चाहिए।
- बालक के व्यक्तित्व का सम्पूर्ण विकास कर जनतांत्रिक मूल्यों की स्थापना करना।
- प्रगतिशील शिक्षा का उद्देश्य बालकों के सर्वांगीण विकास को प्रोत्साहित करना है।

प्रगतिशील शिक्षा के विकास में योगदान देने वाले मनोवैज्ञानिक सिद्धान्त

- **मस्तिष्क एवं बुद्धि:** मस्तिष्क और बुद्धि मनुष्य की उन क्रियाओं का परिणाम हैं जो वह अपने दैनिक जीवन की समस्याओं को हल करने के लिए करता है। जैसे-जैसे वह अपने मानसिक शक्तियों का प्रयोग करता है, उसका मानसिक विकास भी होता है। मस्तिष्क के तीन रूप चिन्तन, अनुभूति और संकल्प हैं, जो समस्याओं के समाधान में सहायक होते हैं।
- **ज्ञान:** ज्ञान अनुभव का परिणाम है। अनुक्रमिक अनुभव ही ज्ञान का मुख्य स्रोत होता है। व्यक्ति का संपूर्ण ज्ञान अनुभवों पर आधारित होता है।
- **मौलिक प्रवृत्तियाँ:** व्यक्ति के अस्तित्व की रक्षा, भोजन, वस्त्र आदि पाने के लिए किया गया संघर्ष उसकी मौलिक प्रवृत्तियों और भावनाओं को प्रभावित करता है। शिक्षा को भी इसी संघर्ष के संदर्भ में समझा जाता है।
- **चिन्तन की प्रक्रिया:** सोचने का कारण होता है और यह केवल मनन या भावना से उत्पन्न नहीं होता। जब किसी कार्य में बाधा आती है, तभी व्यक्ति सोचने के लिए बाध्य होता है। इसी प्रक्रिया के आधार पर प्रगतिशील शिक्षा की नींव रखी गई है।

Toppersnotes Unleash the topper in you

2
CHAPTER

भाषा एवं विचार

भाषा : अर्थ एवं परिभाषा

भाषा का विकास बालक के जीवन में जन्म के कुछ ही महीनों बाद आरम्भ हो जाता है। सामान्यतः एक शिशु छह माह की आयु में "माँ" जैसे ध्वनि संकेत उच्चारित करना प्रारम्भ करता है। यही ध्वनि संकेत आगे चलकर संप्रेषण का सशक्त माध्यम बनते हैं। **प्रारम्भिक अवस्था में शिशु अपने घर-परिवार में बोली जाने वाली भाषा को सीखता है, जिसे मातृभाषा कहा जाता है।** विद्यालय स्तर पर वह एक औपचारिक भाषा जैसे हिन्दी या अंग्रेज़ी सीखता है, जिससे उसके भाषिक ज्ञान का दायरा विस्तृत होता है।

भाषा विचार, भाव और अनुभवों के आदान-प्रदान का प्रमुख साधन है। यह केवल बोली या ध्वनि संकेत नहीं है, बल्कि यह व्यक्ति के सम्पूर्ण संप्रेषण व्यवहार को व्यक्त करती है। मनुष्य बोलकर, लिखकर, संकेतों द्वारा, अंग-प्रत्यंगों के संचालन से, हाव-भाव और चेहरे की अभिव्यक्ति के माध्यम से अपने विचारों को संप्रेषित करता है। इसी व्यापक अर्थ में **हरलॉक ने भाषा को "सभी संप्रेषण साधनों का समुच्चय" कहा है।**

महर्षि पतंजलि – "वर्णों द्वारा विचारों की अभिव्यक्ति ही भाषा है।"

आचार्य दण्डी – "शब्दों के बिना सृष्टि अंधकारमय हो जाती।"

डॉ. बाबूराम सक्सेना – "ध्वनि-चिह्नों द्वारा किया गया विचार-विनिमय ही भाषा है।"

सुमित्रानंदन पंत – "भाषा विश्व की हृदय-तन्त्री की झंकार है।"

स्वीट – "ध्वन्यात्मक शब्दों द्वारा विचारों का प्रकटीकरण ही भाषा है।"

ब्रिटेनिका विश्वकोश – "भाषा एक ऐसी ध्वनि-प्रतीक प्रणाली है जिससे समाज के लोग भावों का आदान-प्रदान करते हैं।"

हरलॉक – "भाषा संप्रेषण के सभी पक्षों को समेटती है – लिखना, बोलना, संकेत, कला, इत्यादि।"

विचार : अर्थ

विचार वह मानसिक प्रक्रिया है जिसके माध्यम से व्यक्ति किसी वस्तु, स्थिति या विषय पर सोच-विचार कर, तर्कों द्वारा उसे किसी निष्कर्ष पर पहुँचाता है। जब मस्तिष्क अपनी सूझ-बूझ, अनुभव और ज्ञान का उपयोग करके किसी सोच को अंतिम रूप देता है, तब वह संकल्पित धारणा **विचार** कहलाती है।

भाषा व सम्प्रेषण

भाषा एक **प्रतीकात्मक व्यवस्था** है जिसके माध्यम से विचारों और भावनाओं का संप्रेषण किया जाता है। इसमें दो प्रमुख पक्ष होते हैं—**प्रतीक** और **सम्प्रेषण**।

- प्रतीक किसी वस्तु या भावना के संकेत होते हैं। उदाहरणतः “विद्यालय” केवल एक इमारत नहीं, अपितु शिक्षा के स्थान का द्योतक है।
- भाषा के माध्यम से मनुष्य न केवल मूर्त वस्तुओं बल्कि **अमूर्त भावनाओं** को भी व्यक्त कर सकता है।

- संवाद का माध्यम केवल शब्द नहीं, बल्कि **हावभाव, चेहरे की अभिव्यक्ति, संकेत**, आदि भी होते हैं। इसे **अमौखिक सम्प्रेषण** कहा जाता है।

भाषा का महत्व

- **व्यक्तित्व विकास में योगदान**
  - ✓ भाषा अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है। जब मनुष्य अपनी भावनाओं व विचारों को भाषा के माध्यम से प्रकट करता है, तब उसका **व्यक्तित्व परिलक्षित होता है**।
  - ✓ **रायबर्न** के अनुसार - "भाषा के बिना बौद्धिक, आत्मिक व रचनात्मक विकास असम्भव है।"
- **सुसंस्कृत नागरिक निर्माण में भूमिका**
  - ✓ भाषा केवल बौद्धिक नहीं, बल्कि **नैतिक, चारित्रिक व सामाजिक विकास** में भी सहायक है।
  - ✓ **माइकल वेस्ट** के अनुसार - "भाषा का महत्व केवल बौद्धिक ही नहीं, चारित्रिक विकास में भी है।"
- **विचार-विनिमय का साधन**
  - ✓ भाषा विचारों के आदान-प्रदान का प्रमुख माध्यम है।
  - ✓ संकेतों से सीमित संप्रेषण होता है, परंतु **भाषा संवाद को सुस्पष्ट, गहन और प्रभावी बनाती है।**
- **ज्ञान वृद्धि का माध्यम**
  - ✓ भाषा के बिना **शिक्षा और ज्ञान अर्जन असम्भव** है।
  - ✓ भाषा के माध्यम से शब्द-भंडार समृद्ध होता है, नए विषयों का अध्ययन संभव होता है, और मानवीय संबंध सुदृढ़ होते हैं।

भाषा के घटक

मनोभाषाविज्ञानियों ने अपने अध्ययनों के आधार पर भाषा के पाँच घटकों का उल्लेख किया है-

- **ध्वनिविज्ञान (Phonology) :** प्रत्येक भाषा की अपनी ध्वनि प्रणाली (Phoneme) होती है। इनसे संयुक्त सार्थक शब्द निर्मित किये जाते हैं।
- **रूपविज्ञान (Morphology) :** इसका आशय उन नियमों से है जिनके द्वारा ध्वनियों के आधार पर सार्थक शब्द निर्मित किये जाते हैं।
- **शब्दार्थ विज्ञान (Semantics):** इसका आशय शब्दों एवं वाक्यों के माध्यम से अर्थ (Meaning) व्यक्त करने से है। जैसे-कुत्ता, सेब, गाड़ी आदि।
- **वाक्यविन्यास (Syntax):** इसका आशय भाषा की संरचना से है। ये वे नियम हैं जिनके आधार पर शब्दों को संयुक्त करके वाक्यांश या वाक्य बनाये जाते हैं।
- **प्रैग्मैटिक्स (Pragmatics) :** इसका तात्पर्य ऐसे नियम या ज्ञान से है जिसके आधार पर भाषा का सम्प्रेषण हेतु प्रभावी ढंग से उपयोग किया जाता है।

भाषा की विशेषताएँ :

- **भाषा पैतृक सम्पत्ति नहीं है :** भाषा जन्म के साथ प्राप्त नहीं होती, अपितु यह बालक अपने परिवेश से अर्जित करता है। यदि भाषा पैतृक सम्पत्ति होती, तो विदेशों में पले-बढ़े बालक अपने पूर्वजों की भाषा बोलते। उदाहरणतः, भारतीय मूल का बालक यदि इंग्लैंड में पले, तो वह अंग्रेज़ी बोलेगा, हिन्दी नहीं।
- **भाषा परम्परागत है, व्यक्ति उसका अर्जन कर सकता है, उत्पत्ति नहीं :** भाषा की उत्पत्ति किसी एक व्यक्ति से नहीं होती, बल्कि यह समाज व परम्परा से विकसित होती है। व्यक्ति उसमें बदलाव तो कर सकता है, किन्तु उसे नया उत्पन्न नहीं कर सकता।
- **भाषा का कोई अन्तिम स्वरूप नहीं होता :** भाषा एक जीवंत और सतत परिवर्तनीय प्रक्रिया है। इसका कोई अंतिम या स्थिर रूप नहीं होता। जीवित भाषाएँ निरंतर विकासशील होती हैं।

- **भाषा संयोगावस्था से वियोगावस्था की ओर बढ़ती है :** भाषा की प्रवृत्ति सरलता की ओर होती है। प्रारम्भिक भाषाएँ जटिल और संयुक्त थीं, जैसे संस्कृत; आधुनिक भाषाएँ विखंडित और सरल हो गई हैं, जैसे हिन्दी।

  उदाहरणः मोहनः खादति → मोहन खाता है
- **भाषा आद्यन्त सामाजिक वस्तु है :** भाषा का विकास, प्रयोग और अर्जन सामाजिक परिवेश में ही होता है। यह व्यक्ति को समाज से जोड़ने वाली सबसे महत्वपूर्ण कड़ी है।
- **भाषा स्थूलता से सूक्ष्मता और प्रौढ़ता की ओर बढ़ती है :** प्रारम्भिक भाषाएँ केवल मूर्त विषयों को व्यक्त कर पाती थीं। आधुनिक भाषाएँ अमूर्त विचारों, भावों, विज्ञान, तकनीकी और कला जैसे क्षेत्रों में भी प्रयुक्त होती हैं। यह प्रयोग की गहनता पर निर्भर करता है।
- **भाषा अर्जित सम्पत्ति है :** मनुष्य भाषा को अपने वातावरण से अर्जित करता है। कोई भी भाषा जन्मजात नहीं होती। बालक जिस वातावरण में पलेगा, वह वहीं की भाषा बोलेगा।
- **भाषा का अर्जन अनुकरण द्वारा होता है :** बालक अपने परिवेश से सुनकर, देखकर और दोहराकर भाषा सीखता है। **अनुकरण** (Imitation) भाषा अर्जन की मूल प्रक्रिया है।
- **भाषा कठिनता से सरलता की ओर अग्रसर होती है :** भाषा में मानवीय प्रवृत्तियों के अनुसार सरलता की ओर परिवर्तन होता है। जैसे—टेलीविजन को टी.वी. कहना, अथवा जटिल व्याकरणिक संरचनाओं का लोप।
- **भाषा चिर परिवर्तनशील है :** भाषा का मौखिक स्वरूप सतत परिवर्तनशील है। अनुकरण की अपूर्णता, मानसिक-शारीरिक विभिन्नताएँ, क्षेत्रीय प्रभाव आदि कारणों से इसमें निरंतर परिवर्तन होते रहते हैं।

भाषा में विचारों के प्रकार

विचारों के दो प्रकार होते हैं-

- **शाब्दिक विचार :** ये विचार उन सूचनाओं से सम्बन्ध रखते हैं जो शाब्दिक रूप में भेजे जाते हैं। शाब्दिक विचार निम्न प्रकार के होते हैं-
  - ✓ **मौखिक विचार :** जिनका आदान-प्रदान बोलकर या सुन कर होता है वे मौखिक विचार होते हैं। जैसे बालकों का आपस में बातचीत करना।
  - ✓ **दृष्टि विचार :** ऐसे विचार जिन्हें बालक देखकर समझता है वे दृष्टि विचार होते हैं। जैसे-पोस्टर और चार्ट।
  - ✓ **मौखिक दृष्टि विचार :**ऐसे विचार जिन्हें बालक देख और सुन तो सकता है परन्तु अपनी प्रतिक्रिया नहीं दे सकता है। जैसे-टीवी देखना आदि।
  - ✓ **लिखित विचार :** ऐसे विचार जिन्हें बालक पढ़ कर अथवा लिख कर व्यक्त करता है और समझता है। जैसे-पत्र लिखना और समाचार-पत्र पढ़ना।
- **अशाब्दिक भाषा :** ऐसी भाषा जिसमें न तो बालक मौखिक रूप से कुछ बोलता सुनता है और न ही लिखता पढ़ता है।
  - ✓ **शारीरिक भाषा :** ऐसी भाषा जिसमें शरीर के भागों के द्वारा विचारों का आदान-प्रदान होता है शारीरिक भाषा कहलाती है। जैसे-हाथ हिलना, उँगली दिखाना।
  - ✓ **कूट भाषा :** कई बार विचारों को व्यक्त करने के लिए कई प्रकार के कूट प्रयोग में लाये जाते हैं जिनका कोई शाब्दिक अर्थ नहीं होता। इनका अर्थ पहले से सुनिश्चित किया जाता है।

भाषा शिक्षण के सिद्धांत

- **भाषा मिश्रण का सिद्धांत (Principle of Language Integration)**
  - ✓ बालक सामाजिक वातावरण में **अनुभव, अनुकरण और संवाद** के माध्यम से भाषा सीखता है।
  - ✓ वह उन कार्यों को करता है जिनमें उसकी **स्वाभाविक रुचि** होती है।
  - ✓ इसलिए शिक्षक को चाहिए कि वह शिक्षण करते समय बालक की **रुचियों, आवश्यकताओं, क्षमताओं एवं अनुभवों** को ध्यान में रखे।
  - ✓ **उप-तत्व**:
    - वस्तु दिखाकर सिखाना
    - खेल-खेल में सिखाना
    - बालक के जीवन की घटनाओं से जोड़ना
    - पूर्वज्ञान से नवीन ज्ञान की ओर ले जाना
    - योग्यता अनुसार प्रश्न पूछना
- **क्रिया का सिद्धांत (Principle of Activity or Learning by Doing)**
  - ✓ **अभ्यास व क्रियाओं के माध्यम से** बालकों को भाषा शिक्षण में सक्रिय किया जाता है।
  - ✓ बालक तब बेहतर सीखते हैं जब वे स्वयं कुछ **करते हैं, बोलते हैं, लिखते हैं**।

  उदाहरण:
  - ✓ पाठ सुनाकर अनुकरण कराना
  - ✓ कहानी सुनाकर प्रश्न पूछना
  - ✓ लिखित कार्य द्वारा अभिव्यक्ति कराना
- **स्वाभाविकता का सिद्धांत (Principle of Naturalness)**
  - ✓ बालक **जन्म से ही भाषा सीखना आरम्भ कर देता है**।
  - ✓ वह अपने परिवेश से भाषा को **स्वाभाविक रूप से** सीखता है—पहले सुनना, फिर बोलना।
- **वैयक्तिक भिन्नता का सिद्धांत (Principle of Individual Differences)**
  - ✓ सभी बालकों की **रुचि, योग्यता, सीखने की गति व शैली** भिन्न होती है।
  - ✓ शिक्षक को इन विविधताओं का ध्यान रखते हुए शिक्षण करना चाहिए।
- **अनुपात और क्रम का सिद्धांत (Principle of Proportion and Sequence)**
  - ✓ भाषा के दो रूप होते हैं: **मौखिक (oral)** और **लिखित (written)**।
  - ✓ बालक पहले **सुनता है, फिर बोलता है**, फिर **पढ़ना और लिखना** सीखता है।
  - ✓ शिक्षण में इस **स्वाभाविक क्रम का पालन** आवश्यक है।

विकास की विभिन्न अवस्थाओं में भाषा विकास की विशेषताएँ

विकास अवस्था	**भाषा विकास की विशेषता**
शैशवावस्था (0–2 वर्ष)	ध्वनियों की पहचान, रोने-किलकारी से प्रारंभ; माँ, पापा जैसे शब्दों का प्रयोग
बाल्यावस्था (3–6 वर्ष)	सरल वाक्य बनाना, कहानी सुनना, कल्पनाशील भाषा, प्रश्न पूछना
प्राथमिक अवस्था (6–12 वर्ष)	शब्द भंडार में वृद्धि, व्याकरणिक रचना में सुधार, पढ़ना-लिखना सीखना
किशोरावस्था (12–18 वर्ष)	विचारों की स्पष्ट अभिव्यक्ति, तर्कयुक्त भाषा प्रयोग, साहित्यिक अभिरुचि

पियाजे के भाषा पर विचार :

- **भाषा: विचार की स्वतंत्रता का माध्यम**
  - ✓ **पियाजे** का मानना था कि भाषा मानसिक प्रतीकों में संसार को निरूपित करने का **सबसे लचीला साधन** है।
  - ✓ भाषा के द्वारा **विचार को क्रिया से अलग किया जा सकता है**, जिससे सोचने की प्रक्रिया अधिक **सक्षम और लचीली** बनती है।
  - ✓ शब्दों के माध्यम से व्यक्ति **तात्कालिक अनुभवों की सीमाओं** से बाहर जाकर **भूत, वर्तमान और भविष्य** पर विचार प्रकट कर सकता है।
  - ✓ भाषा कल्पना की शक्ति को भी बढ़ाती है — जैसे भूखी बिल्ली का केला खाना, या जंगल में उड़ते दैत्य।
- **भाषा की सीमित भूमिका पर पियाजे की मान्यता**
  - ✓ पियाजे के अनुसार, **भाषा संज्ञानात्मक विकास का कारण नहीं, परिणाम** है।
  - ✓ उनका मानना था कि संज्ञानात्मक विकास **ऐन्द्रिक (sensory) और चालन (motor) गतिविधियों** से उत्पन्न होता है, भाषा से नहीं ।
  - ✓ बच्चे अनुभवों से अपने मस्तिष्क मे **आंतरिक छवियाँ (internal images)** बनाते हैं और फिर **उन छवियों को शब्दों** के माध्यम से व्यक्त करने का प्रयास करते हैं।
- **प्रारंभिक शब्दों का अनुभव-आधारित होना**
  - ✓ बच्चे आरंभिक शब्द उन्हीं अनुभवों से जोड़ते हैं जो उन्होंने स्वयं **अनुभव और गति** द्वारा देखे हों या सुने हो ।
  - ✓ ये शब्द उन वस्तुओं और कार्यों से संबंधित होते हैं जिन्हें बच्चे द्वारा **देखा, छुआ, या किया** गया हो।

बालक के भाषा विकास और विचारों को प्रभावित करने वाले तत्व

- **लिंग भेद (Gender Differences)**
  - ✓ जन्म के पहले वर्ष में भाषा विकास में लिंग का कोई अंतर नहीं होता।
  - ✓ **दूसरे वर्ष से लड़कियाँ लड़कों की तुलना में भाषा विकास में आगे** निकलने लगती हैं।
  - ✓ वे शब्द भंडार, वाक्य की लम्बाई, उच्चारण और शुद्धता में आगे होती हैं।
  - ✓ हालांकि, **पूर्ण विकास की अवस्था** तक पहुँचते-पहुँचते प्रायः लड़के आगे निकल जाते हैं।
- **बुद्धि (Intelligence)**
  - ✓ भाषा विकास का **गहरा संबंध बालक की बुद्धि से** होता है।
  - ✓ **उच्च बुद्धि वाले बच्चे शीघ्र बोलना** सीखते हैं, जबकि मंदबुद्धि बालक **भाषा सीखने में विलंब** करते हैं।
  - ✓ प्रारंभिक वर्षों में जो बालक **भाषिक रूप से तीव्र होते हैं**, वे आगे चलकर **विचार अभिव्यक्ति में भी दक्ष** होते हैं।
- **स्वास्थ्य (Health)**
  - ✓ बार-बार बीमार रहने वाले बालकों का भाषा विकास बाधित होता है क्योंकि:
    - वे **अन्य बच्चों के संपर्क में कम** रहते हैं।
    - उनकी आवश्यकताएँ **बिना संवाद के पूरी** कर दी जाती हैं, जिससे उन्हें **प्रेरणा नहीं मिलती**।
  - ✓ **शारीरिक विकार** जैसे तालु, जबड़े, दाँत और कंठ संबंधी दोष भी **भाषा विकास में बाधक** होते हैं।

ToppersNotes Unleash the topper in you

- **पारिवारिक सम्बन्ध (Family Relationships)**
  - ✓ माता-पिता का **स्नेहपूर्ण या कठोर व्यवहार** बालक के भाषा विकास को प्रभावित करता है।
  - ✓ **बहुसंतान वाले परिवारों** में प्रत्येक बालक को पर्याप्त ध्यान नहीं मिल पाता, जिससे भाषा विकास धीमा हो जाता है।
  - ✓ **जुड़वाँ बच्चों में विकास धीमा** पाया गया है क्योंकि अनुकरण के अवसर सीमित होते हैं।
  - ✓ **सामान्य परिवार में पला बालक**—अनाथालय में पले बालक की तुलना में—भाषा में अधिक तीव्र प्रगति करता है।
- **सामाजिक और आर्थिक स्थिति (Socio-Economic Status)**
  - ✓ **शिक्षित और उच्च सामाजिक स्तर** वाले परिवारों के बालकों का भाषा विकास अधिक तीव्र होता है।
  - ✓ उनका **शब्द भंडार समृद्ध** होता है और **वाक्य रचना अधिक सुसंगठित** होती है।
  - ✓ अशिक्षित परिवारों के बच्चों में यह प्रगति अपेक्षाकृत धीमी होती है।

3 CHAPTER सीखने का मूल्यांकन

मापन

- मापन की प्रक्रिया औपचारिक है, जबकि मूल्यांकन एक अनौपचारिक प्रक्रिया है, जो निरन्तर चलती रहती रहती है।
- मापन में किसी व्यक्ति या वस्तु का मापन न होकर उसके गुण विशेष का मापन किया जाता है।
- मापन में योग्यता एवं विशेषताओं को गणितीय स्वरूप में बदलकर निश्चित किया जाता है।

एस.एस. स्टीवेन्स: "मापन किन्हीं निश्चित स्वीकृत नियमों के अनुसार वस्तुओं को अंक प्रदान करने की प्रक्रिया है।"

माइकल एवं कार्नीस:"मापन यह बताता है कि कोई वस्तु कितनी मात्रा में है या कितनी अधिक या कम है।"

ब्रेडफील्ड एवं मोरेडॉक:"किसी तथ्य के विभिन्न आयामों को प्रतीक प्रदान करना मापन कहलाता है।"

हैल्मस्टेडर: "मापन किसी व्यक्ति या पदार्थ में निहित विशेषताओं के आंकीक वर्णन की प्रक्रिया है।"

मापन के कार्य

मापन की प्रक्रिया में तथ्यों को उचित इकाई में प्रकट किया जाता है। मापन में वस्तु या इकाई के गुण के परिमाण या मात्रा का पता लगाया जाता है।

- छात्रों की प्रगति की जानकारी प्रदान करना।
- वस्तुओं के गुणों को परिमाण में बदलना।
- बालकों की कमजोरी का पता लगाकर निदानात्मक कार्य करना।
- पाठ्यक्रम में उचित संशोधन व परिवर्द्धन करना।
- छात्रों को उनकी योग्यता के अनुसार वर्गीकरण करना।

मापन की विशेषताएँ

- मापन एक वस्तुनिष्ठ एवं वैज्ञानिक प्रक्रिया है।
- मापन के लिए विशिष्ट मापन उपकरण (मापनी) का प्रयोग होता है, जैसे बिने-साइमन बुद्धि मापनी।
- इसमें इकाइयाँ निर्धारित होती हैं – जैसे लम्बाई के लिए से.मी., मी., वजन के लिए कि.ग्रा. आदि।
- शैक्षिक मापन में – प्रतिशत, Z-score, T-score आदि का उपयोग होता है।
- मापन में प्राप्त अंकों की तुलना के लिए प्रतिमान होते हैं जिससे औसत, सामान्य से अधिक या कम बुद्धि का निर्धारण किया जा सकता है।

मापन के स्तर

- **नामित मापनी (Nominal Scale)**
  - ✓ मापन की सबसे प्रारंभिक एवं सरल मापनी।
  - ✓ वस्तुओं/व्यक्तियों को उनके गुणों के आधार पर अलग-अलग समूहों में वर्गीकृत करना।
  - ✓ संख्याएँ या चिह्न केवल पहचान हेतु होते हैं, उनका गणितीय महत्त्व नहीं होता।
  - ✓ उदाहरण: लिंग के आधार पर मतदाता वर्गीकरण – पुरुष/स्त्री; खेल टीमों को रंग या प्रतीक देना।
- **क्रमिक मापनी (Ordinal Scale)**
  - ✓ यह मापनी वस्तुओं/घटनाओं को क्रम में व्यवस्थित करती है (उच्च–निम्न, श्रेष्ठ–निकृष्ट)।
  - ✓ इसमें मात्र क्रम का पता चलता है, परन्तु इकाइयों के बीच अंतर स्पष्ट नहीं होता।
  - ✓ उदाहरण: रेस में प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान; श्रेष्टता आधारित सूची।

- **अन्तराल मापनी (Interval Scale)**
  - ✓ यह मापनी दो मूल्यों के बीच समान अंतर प्रदर्शित करती है।
  - ✓ इसमें शून्य निरपेक्ष नहीं होता – यानी '0' का मतलब पूर्ण अभाव नहीं है।
  - ✓ उदाहरण: तापमान मापनी (फॉरेनहाइट, सेल्सियस), परीक्षा में अंक।
- **अनुपात मापनी (Ratio Scale)**
  - ✓ यह मापन का सबसे शुद्ध, वैज्ञानिक और विश्वसनीय स्तर है।
  - ✓ इसमें सभी विशेषताएँ होती हैं – नामकरण, क्रम, अंतराल और निरपेक्ष शून्य।
  - ✓ शून्य बिंदु वास्तविक होता है और अनुपात ज्ञात किया जा सकता है।
  - ✓ उदाहरण: लंबाई, वजन, दूरी, आयु, अंक प्रतिशत आदि।

मूल्यांकन

- पाठ्यचर्या के उद्देश्यों और मूल्यों की और छात्रों की प्रवृत्ति व प्रगति का आंकलन करना।
- मूल्यांकन एकांकी न होकर विभिन्न कार्यों की श्रृंखला हैं।
- बालक का सर्वांगीण विकास एक निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया हैं, अतः शिक्षक को इसके लिए निर्धारित शैक्षणिक उद्देश्यों, प्रयुक्त शिक्षण विधियों, शिक्षण सामग्री आदि की उपयोगिता का समय-समय पर मूल्यांकन करते रहना चाहिए।
- सर्वप्रथम लिखित परीक्षा के माध्यम से मूल्यांकन 1702 में इंग्लैण्ड के कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में आयोजित किया गया।
- आधुनिक मूल्यांकन प्रणाली का विकास अमेरिका में 20 वीं शताब्दी में प्रारंभ हुआ।
- भारत में इसका आयोजन 1956 में प्रारंभ हुआ।
- मूल्यांकन की विचारधार बी.एस. ब्लूम की है जिन्होंने इस प्रक्रिया को शैक्षिक उद्देश्य, अधिगम अनुभव एवं मूल्यांकन के रूप में त्रिमुखी बताया।
- मूल्यांकन को पाठ योजना से हरबर्ट स्पेन्सर ने जोड़ा।
  मूल्यांकन = मापन + मूल्य निर्धारण
  = संख्यात्मक + गुणात्मक

गुड्स के अनुसार- मूल्यांकन एक ऐसी प्रक्रिया है, जिससे सही ढंग से किसी वस्तु का मापन किया जा सकता है।

डान्डेकर के अनुसार - मूल्यांकन एक ऐसी क्रमबद्ध प्रक्रिया है, जो हमें यह बताती है कि बालक ने किस सीमा तक किन उद्देश्योंको प्राप्त किया है।

टारगेर्सन तथा एडम्स के अनुसार - मूल्यांकन का अर्थ हैकिसी वस्तु या प्रक्रिया का मूल्य निर्धारित करना तथा शैक्षिक मूल्यांकन से आशय कि सी शिक्षण प्रक्रिया या अधिगम अनुभवों की उपयोगिता के सम्बन्ध में मूल्य प्रदान करना होता है।

क्विलेन व हन्ना के अनुसार - विद्यालय द्वारा बालक केव्यवहार में लाये गये परिवर्तनों के सम्बन्ध में प्रमाणों के संकलन और उनकी व्याख्या करने की प्रक्रिया को मूल्यांकन कहते हैं।

मुफ्फात के अनुसार - मूल्यांकन एक सतत् प्रक्रिया है तथा यह बालकों की औपचारिक शैक्षिक उपलब्धि की उपेक्षा करता है। यह व्यक्ति के विकास में अधिक रूचि रखता है। यह व्यक्ति के विकास को उसकी भावनाओं, विचारों तथा क्रियाओं से सम्बन्धित वांछित व्यवहारगत परिवर्तनों के रूप में व्यक्त करता है।

कोठारी कमीशन के अनुसार - मूल्यांकन एक अनवरत प्रक्रिया है, जो कि सम्पूर्ण शिक्षा प्रणाली का एक अभिन्न अंग है तथा इसका शैक्षिक उद्देश्यों से घनिष्ठ सम्बन्ध रहता है

ब्लूम - मूल्यांकन योग्यता नियंत्रण की एक अवस्था है, जिसमें शिक्षण एवं अधिगम प्रक्रिया की प्रभावशीलता का आंकलन किया जाता है।

मूल्यांकन में क्या-क्या आँका जाता है? (NCERT के अनुसार)

क्रम	मूल्यांकन क्षेत्र	उद्देश्य
1.	शिक्षण उद्देश्यों की प्राप्ति	क्या लक्ष्य हासिल हुए?
2.	उद्देश्य प्राप्ति की विधियाँ/प्रविधियाँ	कितना प्रभावी रहा शिक्षण?
3.	अधिगम अनुभवों की उत्पादकता	छात्रों ने कितना सार्थक सीखा?

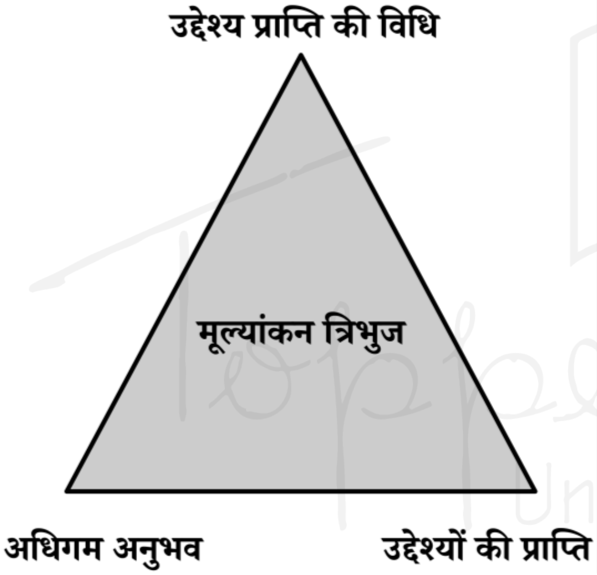

मूल्यांकन प्रक्रिया के सोपन

मूल्यांकन एक मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया है। मूल्यांकन से प्राप्त परिणाम के आधार पर बालकों के बारे में भविष्यवाणी की जाती है। इसलिए मूल्यांकन का उद्देश्यपूर्ण एवं विश्वसनीय होना आवश्यक है।

- सर्वप्रथम मूल्यांकन किये जाने वाले शैक्षिक उद्देश्यों का निर्धारण किया जाता है।
- निर्धारित उद्देश्यों की व्याख्या की जाती है।
- ऐसी परिस्थितियों का निर्माण करना जिसमें छात्र स्वाभाविक व्यवहार कर सकें।
- व्यवहारगत परिवर्तन को जानने के लिए प्रविधि का चयन करना।
- तथ्यों को एकत्रित करना।
- तथ्यों का विश्लेषण कर निष्कर्ष निकालना।
- प्राप्त साक्ष्यों के आधार पर वास्तविक प्रगति का उल्लेख करना।

मूल्यांकन की विशेषतायें

- मूल्यांकन एक सतत् प्रक्रिया है।
- मूल्यांकन शिक्षण प्रक्रिया का अभिन्न अंग है।
- मूल्यांकन का सम्बन्ध शिक्षा के उद्देश्यों से होता है। यह शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति की सीमा का निर्धारण करने वाली प्रक्रिया है।
- मूल्यांकन द्वारा विद्यार्थियों के वांछित व्यवहारगत परिवर्तनों के सम्बन्ध में साक्षियों का संकलन किया जाता है।
- छात्रों की व्यक्तिगत भिन्नता एवं सामूहिक आवश्यकताओं को पूरा करता है।

मूल्यांकन का महत्व

अधिगम की प्रक्रिया को जाँचने के लिए शिक्षण के पश्चात् मूल्यांकन (Evaluation) एक अहम् चरण होता है। इसके द्वारा अनेक महत्वपूर्ण बिन्दुओं की जाँच की जाती है। ये बिन्दु निम्नानुसार हैं-

- मूल्यांकन द्वारा यह ज्ञात किया जाता है कि शिक्षण उद्देश्यों की प्राप्ति कहाँ तक हो सकी है?
- मूल्यांकन द्वारा यह निश्चित किया जाता है कि किन विशिष्ट उद्देश्यों की प्राप्ति नहीं हो पायी है ताकि उपचारात्मक अनुदेशन दिया जाए।
- कक्षा में छात्रों का स्तरीकरण (Ranking) करने में भी मूल्यांकन महत्वपूर्ण प्रक्रिया मानी गयी है।
- मूल्यांकन कक्षा शिक्षण में प्रयुक्त होने वाली शिक्षण विधियों की उपयोगिता तथा कमजोरियों का पता लगाने में सहायक होता है।

- मूल्यांकन के आधार पर विद्यार्थियों की वैयक्तिगत भिन्नता (Individual Difference) को समझने में भी सहायता मिलती है।
- मूल्यांकन पाठ्यक्रम के परिमार्जन एवं परिवर्तन में भी सहायक होता है।
- मूल्यांकन शिक्षकों एवं छात्रों दोनों को ही पुनर्बलन (Reinforcement) तथा पृष्ठ पोषण देने का कार्य करता है।
- छात्रों की व्यक्तिगत भिन्नता एवं सामूहिक आवश्यकताओं को पूरा करना।
- अध्यापक की शिक्षण-कुशलता तथा सफलता की जाँच करना।
- मूल्यांकन माप (Measurement) के अनेक दोषों को दूर करने में सहायक है।

मूल्यांकन की आवश्यकता

- विभिन्न उद्देश्यों की संप्राप्ति के स्तर की जाँच करना।
- पाठ्यक्रम की उपयुक्तता, अपेक्षित परिवर्तनों के आधारों का मापन।
- मूल्यांकन द्वारा अधिगम की जाँच।
- विधार्थियों की कमी को ढूँढ़कर दूर करना।
- छात्रों के व्यक्तित्व, अभिरुचि, अभिवृत्तियों के निर्देशन का आधार प्राप्त होता हैं।

मूल्यांकन के उद्देश्य

- मूल्यांकन के उद्देश्य निम्न प्रकार हैं-
- शिक्षा के विस्तृत उद्देश्यों को स्पष्ट करना।
- पाठ्यक्रम में आवश्यक संशोधन करना।
- निर्देशन व परामर्श हेतु उचित आधार प्रदान करना।
- परीक्षा प्रणाली में सुधार।
- समस्त विद्यालय कार्यक्रमों का मूल्यांकन करना। उनकी विशेषताओं व कमियों को इंगित करके, उनकी कमियों को दूर करना।
- बालकों के व्यवहार सम्बन्धी परिवर्तनों की जाँच।
- नवीनतम व प्रभावशाली शिक्षण विधियों व प्रविधियों की जाँच करना।
- प्रचलित शिक्षण विधियों व पाठ्य-पुस्तकों की जाँच करके उनमें अपेक्षित सुधार करना।
- बालकों की अधिगम कठिनाइयों का पता लगाना।
- अनुदेशन (Instruction) की प्रभावशीलता का पता लगाना।
- शिक्षण व्यूह-रचना में सुधार व विकास करना।
- उपचारात्मक शिक्षण में सहायता करना।
- बालकों को उत्तम ढंग से सीखने हेतु प्रोत्साहित करना।
- बालकों की व्यक्तिगत व सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु जानकारी प्रदान करना।

मूल्यांकन प्रक्रिया

- मूल्यांकन का प्रत्येक चरण अन्य चरणों पर आधारित होता है — यह एक **अंतर-संबंधित प्रक्रिया** है।
- व्यवहार के तीनों पक्षों (संज्ञानात्मक, भावात्मक, क्रियात्मक) में **आपसी समन्वय** होता है।
- मूल्यांकन से केवल परिणाम ही नहीं, बल्कि शिक्षा की **प्रभावशीलता** भी निर्धारित होती है।

मूल्यांकन प्रक्रिया के मुख्य चरण

- **उद्देश्यों का निर्धारण एवं परिभाषीकरण**
  - ✓ बालक की सामाजिक स्थिति, विषय-वस्तु की प्रकृति और शैक्षिक स्तर के अनुसार लक्ष्य निर्धारित करें।
  - ✓ व्यवहार परिवर्तन को स्पष्ट रूप से परिभाषित करना आवश्यक।
  - ✓ उद्देश्य विषयवस्तु और व्यवहार दोनों पर केंद्रित होने चाहिए।

- **अधिगम अनुभव की योजना बनाना**
  - ✓ उद्देश्यों के अनुरूप अनुभवों की योजना बनाएं।
  - ✓ अनुभव ऐसे हों कि छात्र वांछित प्रतिक्रियाएँ व्यक्त कर सके।
  - ✓ योजना बनाते समय आयु, लिंग, परिवेश, सामाजिक पृष्ठभूमि आदि पर विचार आवश्यक।
- **विभिन्न उपकरणों द्वारा साक्ष्य एकत्र करना**
  - ✓ उपयुक्त मूल्यांकन उपकरणों का चयन या निर्माण।
  - ✓ उनके माध्यम से साक्ष्य इकट्ठा कर व्यवहार परिवर्तन का मूल्यांकन करें।

1. **व्यवहार परिवर्तन के क्षेत्र :** बालक के जीवन में आने वाले व्यवहार परिवर्तन, मूल्यांकन के फलस्वरूप ही होते हैं। मूल्यांकन इन व्यवहार परिवर्तनों के लिये एक माध्यम का कार्य करता है। व्यवहार परिवर्तन को मुख्यतः तीन पक्षों में विभाजित किया जाता है-
   - ✓ **संज्ञानात्मक पक्ष (Cognitive Domain)** – ज्ञान और बौद्धिक विकास से संबंधित Bloom के अनुसार इसमें शामिल हैं:
     - तथ्य, मान्यताएँ, सिद्धांत, घटनाएँ, विधियाँ आदि का ज्ञान।
     - इसके छः स्तर:

     i. ज्ञान (Knowledge)
     ii. बोध (Comprehension)
     iii. प्रयोग (Application)
     iv. विश्लेषण (Analysis)
     v. संश्लेषण (Synthesis)
     vi. मूल्यांकन (Evaluation)
   - ✓ **भावात्मक पक्ष (Affective Domain)** – भावनाओं, दृष्टिकोण, रुचियों से संबंधित
     - इसके चरण:

     i. ग्रहण करना (Receiving)
     ii. प्रतिक्रिया देना (Responding)
     iii. अनुमूल्यन (Valuing)
     iv. संगठन (Organization)
     v. चरित्रीकरण (Characterization)
   - ✓ **क्रियात्मक पक्ष (Psychomotor Domain)** – शारीरिक क्रियाओं व कौशल से संबंधित
     - इसके स्तर:

     i. उत्तेजना (Imitation)
     ii. क्रियान्वयन (Manipulation)
     iii. नियंत्रण (Precision)
     iv. समायोजन (Articulation)
     v. स्वभावीकरण (Naturalization)
     vi. कौशल (Skill)

मूल्यांकन का वर्गीकरण

- **आन्तरिक मूल्यांकन (Internal Evaluation)**
  - ✓ **परिभाषा:** कक्षा या विद्यालय स्तर पर शिक्षक द्वारा विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धियों का मूल्यांकन।
  - ✓ **विशेषताएँ:**
    - साप्ताहिक, मासिक, अर्द्धवार्षिक एवं वार्षिक परीक्षाओं द्वारा।
    - शिक्षक विद्यार्थियों की क्षमताओं, रुचियों व व्यवहार से परिचित होते हैं।
    - उत्तर–पुस्तिकाओं का मूल्यांकन संपर्क में रहने वाले शिक्षक ही करते हैं।
  - ✓ **समस्या:**
    - पक्षपात, आत्मनिष्ठता और पूर्वधारणाएँ मूल्यांकन की **विश्वसनीयता व वस्तुनिष्ठता** को प्रभावित करती हैं।
    - सुधार के लिए **गोपनीयता, ईमानदारी व पारदर्शिता** आवश्यक है।

- **बाह्य मूल्यांकन (External Evaluation)**
  - ✓ **परिभाषा:** विद्यालय के बाहर किसी स्वतंत्र व निष्पक्ष परीक्षक द्वारा विद्यार्थियों के ज्ञान, कार्यों व परीक्षाओं का मूल्यांकन।
  - ✓ **लक्षण:**
    - एकरूपता, वैधता, वस्तुनिष्ठता तथा निष्पक्षता सुनिश्चित करता है।
    - छात्रों में प्रतिस्पर्धा की भावना जाग्रत करता है।
  - ✓ **हानि :**
    - रटने की प्रवृत्ति, चयनात्मक अध्ययन को बढ़ावा।
    - छात्र का सम्पूर्ण विकास नहीं हो पाता।
    - उत्तर-पुस्तिका की उपेक्षा या लापरवाही से मूल्यांकन की गुणवत्ता प्रभावित होती है।
  - ✓ **कोठारी आयोग (1964–66):** बाह्य मूल्यांकन शिक्षा के वास्तविक उद्देश्यों को नहीं दर्शा पाता — केवल पाठ्यवस्तु का मूल्यांकन।
- **संरचनात्मक मूल्यांकन (Formative Evaluation)**
  - ✓ **परिभाषा:** किसी भी शैक्षिक योजना, पाठ्यक्रम या विधि के प्रारंभिक स्वरूप का परीक्षण एवं उसमें सुधार।
  - ✓ **उद्देश्य:**
    - त्रुटियों की पहचान करना और सुधार करना।
    - शैक्षिक योजना को अंतिम रूप देने से पहले उसका मूल्यांकन।
  - ✓ **प्रक्रिया:**
    - प्रारंभिक प्रारूप तैयार
    - प्रत्येक भाग की व्याख्या
    - विशेषज्ञों की राय एकत्रित करना
    - सुधार करके अंतिम रूप देना
  - ✓ **उदाहरण:** लेखक द्वारा पुस्तक का पहला मसौदा बनाकर शिक्षकों व विशेषज्ञों से सुझाव लेना।
- **योगात्मक मूल्यांकन (Summative Evaluation)**
  - ✓ **परिभाषा:** किसी शिक्षा योजना/पाठ्यक्रम को पूर्ण रूप से लागू करने के बाद उसके प्रभाव का मूल्यांकन।
  - ✓ **उद्देश्य:**
    - यह तय करना कि शिक्षा कार्यक्रम को भविष्य में जारी रखा जाए या नहीं।
    - उसकी उपयोगिता, गुणवत्ता और प्रभावशीलता की जाँच।
  - ✓ **प्रक्रिया:**
    - रेटिंग स्केल, साक्षात्कार, प्रश्नावली आदि से जानकारी एकत्रित करना।
    - विद्यार्थियों, शिक्षकों और विशेषज्ञों से फीडबैक लेना।
  - ✓ **उदाहरण:** एक प्रकाशित पुस्तक पर प्रतिक्रिया प्राप्त करना – उपयोगिता, बिक्री, परिणामों में सुधार आदि के आधार पर।

<u>मूल्यांकन के उपकरण व प्रविधियाँ</u>

- **परीक्षण प्रक्रियाएँ (Testing Procedures)**

a. लिखित परीक्षाएँ
  - ✓ **उद्देश्य:** छात्र के ज्ञान, विश्लेषण, व्याख्या, तर्क क्षमता आदि का परीक्षण।
  - ✓ **प्रकार:**
    - **निबंधात्मक परीक्षा:** छात्र को उत्तर लिखने की स्वतंत्रता होती है।
      - ☞ विशेषताएँ: मौलिकता, लेखन शैली, विश्लेषण, निर्णय क्षमता।
      - ☞ सीमा: आत्मनिष्ठता का प्रभाव।
    - **वस्तुनिष्ठ परीक्षा:** पूर्व निर्धारित उत्तर (MCQ, True/False, Matching etc.)

- ☞ विशेषताएँ: मापन में सटीकता, विश्लेषण में सहूलियत।
- ☞ सीमा: सृजनात्मकता की जाँच सीमित।

b. मौखिक परीक्षाएँ

- ✓ **उपयोग:** भाषा कौशल, आत्मविश्वास, तात्कालिक उत्तर देने की क्षमता।
- ✓ **उदाहरण:** साक्षात्कार, वाद-विवाद, मौखिक Viva आदि।
- ✓ **सीमा:** आत्मनिष्ठता अधिक, प्रश्नों की गहराई पर निर्भर।

c. प्रयोगात्मक परीक्षाएँ

- ✓ **उपयोग:** व्यावहारिक ज्ञान का परीक्षण जैसे – विज्ञान प्रयोग, चित्रकला, भूगोल।
- ✓ **विशेषता:** छात्र की वास्तविक क्रियात्मक क्षमता का मूल्यांकन।
- ✓ **सीमा:** संसाधनों की आवश्यकता।

d. विशेष मनोवैज्ञानिक परीक्षण

- ✓ **प्रकार:** बुद्धि परीक्षण (IQ), व्यक्तित्व, अभिक्षमता, अभिवृत्ति परीक्षण।
- ✓ **उद्देश्य:** छात्र के स्वभाव, क्षमता, और संभावनाओं की पहचान।

➢ **स्वयं आलेख प्रविधियाँ (Self-reporting Techniques)**

a. प्रश्नावली (Questionnaire)

- ✓ **उद्देश्य:** रुचियाँ, दृष्टिकोण, व्यवहार, अभिवृत्तियों की जानकारी।
- ✓ **विशेषता:** बड़ी संख्या में छात्रों से जानकारी एकत्र की जा सकती है।
- ✓ **सीमा:** उत्तरों की ईमानदारी संदिग्ध हो सकती है।

b. आत्मकथा (Autobiography)

- ✓ **प्रक्रिया:** छात्र अपने जीवन के अनुभवों को लिखता है।
- ✓ **उपयोग:** व्यक्तित्व, पारिवारिक पृष्ठभूमि, संघर्ष, दृष्टिकोण का मूल्यांकन।
- ✓ **चरण:** योजना → डेटा संग्रह → लेखन → मूल्यांकन।

c. व्यक्तिगत डायरी (Personal Diary)

- ✓ **उद्देश्य:** छात्रों की दिनचर्या, समस्याएँ, रुचियाँ, मानसिक स्थिति जानना।
- ✓ **विशेषता:** सतत् आत्म-निरीक्षण।

d. साक्षात्कार (Interview)

- ✓ **प्रकार:** संरचित/अर्ध-संरचित/असंरचित।
- ✓ **उपयोग:** गहन मनोवैज्ञानिक व सामाजिक मूल्यांकन।
- ✓ **सीमा:** साक्षात्कारकर्ता की कुशलता पर निर्भर।

e. वाद-विवाद / वार्तालाप (Discussion)

- ✓ **उद्देश्य:** चिंतन, विश्लेषण, दृष्टिकोण, नेतृत्व की पहचान।
- ✓ **सीमा:** समूह-प्रभाव, संकोच से विचार छुप सकते हैं।

➢ **निरीक्षणात्मक प्रविधियाँ (Observational Techniques)**

a. जाँच सूची (Checklist)

- ✓ **प्रयोग:** हाँ/नहीं जैसे उत्तरों में व्यवहार का मापन।
- ✓ **उपयोग:** शिक्षण रुचि, सामाजिक व्यवहार, उपस्थिति।

b. निर्धारण मापनी (Rating Scale)

- ✓ **प्रकार:** 3, 5 या 7-बिंदु मापनी।
- ✓ **उपयोग:** किसी गुण की तीव्रता या स्तर को मापना (जैसे: Poor to Excellent)।

c. वृत्तान्त अभिलेख (Anecdotal Record)

- ✓ **प्रयोग:** विशिष्ट घटनाओं का क्रमबद्ध विवरण।
- ✓ **उपयोग:** सामाजिक समायोजन, नेतृत्व, व्यवहारिक परिवर्तन।